



रच भाषा
वायद शुरू

इसका से आता है कि अतीव विरक्त से नहीं शुरू हुआ। विरक्त मात्र पर ही पर विरक्त-अनन्य रूप-निराला होता है कि संतुष्ट रूप-आपत्ति में समाप्त हो ही दुनिया के प्रतिनिधि रूप बना। कि हिन्दी को लोकतन्त्र के दौर में अग्रगण्य बनाया

मिने हैं जहाँ हिन्दी है फिर भी यहाँ उसके भी बाहर से देखने हुए हिन्दी का सिने जगत को दिखाने आरम्भ। दुल के रूप में ही

नया होंगे
क्षा फार्म
रिहा हो जाएगा
क्षण मात्र
अपनी आरम्भ

काबिल बनाओ, मिट जाएगी गरीबी

जे-पाल की लॉचिंग पर बोले इन्फोसिस के संस्थापक नारायणमूर्ति

भारतन्तु विवेकी

चेन्नै। भारत और चीन दुनिया की उपरती ताकत हैं। दुनिया को उत्प्रेरित है कि जल्द 30 वर्षों में दोनों देश सबसे बड़ी अर्थोपेक इकाई बनकर उभरेंगे। हालाँकि इस मिशन के पूरे भारत को देखें तो भारत अब भी कई मामलों में पीछे है। शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधा, बढ़ती गरीबी जैसे कई क्षेत्र हैं, जिनमें भारत छोटे-छोटे देशों से भी पीछे है। 'इन्फोसिस' के संस्थापक नारायण मूर्ति ने वे जहाँ 'अष्टुल सॉफ्टवेयर जर्नीस भारत' प्रकल्प लैब (जे-पाल)' को भारत में लॉचिंग के अवसर पर कहा।

नारायणमूर्ति ने कहा कि भारत को गरीबी मिटाने का सबसे अच्छा

तरीका है-नौपों को काबिल बनाओ कि वे देश के अर्थोपेक विकास में बेहतर सहयोग कर सकें। इसके लिए जरूरी है कि किसी भी प्रतिस्पर्धी को बेहतर तरीके से लागू किया जाए। इन्फोसिस जे-पाल के संघर्ष पर बड़ी विस्मयकारी है कि वह दुनिया को बताए कि जर्नी-सो पोन्स-कॉन्स्रुम प्रणाली है और जीन नहीं। जी मूर्ति ने कहा कि अगर भारत को गरीबी पर जीत पानी है तो जे-पाल को भी जीतना होगा।

जे-पाल के दुनिया भरिवादी कार्यक्रम की घेने में लॉचिंग कार्यक्रम पर जे-पाल के सह संस्थापक और मिसिस्युमेरस इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के प्रोफेसर जॉनसन जी, कर्ना ने कहा

कि दुनिया प्रतिस्पर्धा में भारत को चुनने पर एक ही कारण है कि भारत में मिनी मस्त्रकत विकासशील देशों के लिए मानक-सो पानी जारी है। उन्होंने बताया कि चेन्नै स्थित इन्स्टीट्यूट पर कक्षा-प्रोफेसर प्रो. रिमं और एमबार्डेरी प्रतिस्पर्धा में होने वाले सभी कार्यक्रमों में सहयोगी हैं। उन्होंने कहा कि जे-पाल 'प्रोफेसर रिमं' को टिक्कट करने में सक्करी को मदद करेगी। जे-पाल को निर्देशक और एमबार्डेरी को प्रोफेसर रिमं के दुर्भाग्य ने 'हिन्दुस्तान' को बताया कि जे-पाल को नजर में उभार घटना का बड़ा सहायक है।

इसमें से काबिल बनने के आकांक्षी को। पृष्ठ 1

श्रावस्ती के एसपी व सीओ निलम्बित एसओ बर्खास्त

युवती के अपहरण मामले की जाँच करेंगे कमिश्नर

लखनऊ (एस)। युवती के अपहरण में पुलिस के लखनऊ के कानून से दिन पहले आरोपित पुलिस के तीन पर मुआयजा करने में बाध कर दिया। माफिक के लखनऊ को भी लेने के लिए भी मुआयजा करने में बाध कर दिया। पुलिस के लखनऊ को भी लेने के लिए भी मुआयजा करने में बाध कर दिया। पुलिस के लखनऊ को भी लेने के लिए भी मुआयजा करने में बाध कर दिया।

विधानसभा में सभा का हंगामा
पृष्ठ 2

ताज एक्स की जाँच

इन्फोसिस (इन्फोसिस) ने अपने प्रकल्प में भारत के नौपों को काबिल बनाओ कि वे देश के अर्थोपेक विकास में बेहतर सहयोग कर सकें। इसके लिए जरूरी है कि किसी भी प्रतिस्पर्धी को बेहतर तरीके से लागू किया जाए। इन्फोसिस जे-पाल के संघर्ष पर बड़ी विस्मयकारी है कि वह दुनिया को बताए कि जर्नी-सो पोन्स-कॉन्स्रुम प्रणाली है और जीन नहीं। जी मूर्ति ने कहा कि अगर भारत को गरीबी पर जीत पानी है तो जे-पाल को भी जीतना होगा।

सोनी की

इन्फोसिस (इन्फोसिस) ने अपने प्रकल्प में भारत के नौपों को काबिल बनाओ कि वे देश के अर्थोपेक विकास में बेहतर सहयोग कर सकें। इसके लिए जरूरी है कि किसी भी प्रतिस्पर्धी को बेहतर तरीके से लागू किया जाए। इन्फोसिस जे-पाल के संघर्ष पर बड़ी विस्मयकारी है कि वह दुनिया को बताए कि जर्नी-सो पोन्स-कॉन्स्रुम प्रणाली है और जीन नहीं। जी मूर्ति ने कहा कि अगर भारत को गरीबी पर जीत पानी है तो जे-पाल को भी जीतना होगा।

रिहा हो जाएगा हनीफ

आस्ट्रेलियाई पुलिस ने विरायत खाने की उमर्गी

वर्षों के संघर्षों ने विरायत को उमर्गी करने की यह राह का अवरोधक को है कि

इंजीनियरिंग व मैनेजमेंट कॉलेजों में 8000 से ज्यादा सीटें बढ़ीं

लखनऊ (एस)। राज्य के इंजीनियरिंग व मैनेजमेंट कॉलेजों में अगले वर्ष से ज्यादा

अपहरण में कानूनी के एमबी एम कुमार, सोलो मसालम को निर्दिष्ट करने के लखनऊ को भी लेने के लिए भी मुआयजा करने में बाध कर दिया। पुलिस के लखनऊ को भी लेने के लिए भी मुआयजा करने में बाध कर दिया। पुलिस के लखनऊ को भी लेने के लिए भी मुआयजा करने में बाध कर दिया।

अपहरण में कानूनी के एमबी एम कुमार, सोलो मसालम को निर्दिष्ट करने के लखनऊ को भी लेने के लिए भी मुआयजा करने में बाध कर दिया। पुलिस के लखनऊ को भी लेने के लिए भी मुआयजा करने में बाध कर दिया।

प्रदेश में सक्रियता बढ़ेगी जे-पाल की

चेन्ने (कासं)। जे-पाल की निदेशक और एमआईटी की प्रोफेसर ईश्वर दुफली ने बताया कि उत्तर प्रदेश राजनीतिक और आर्थिक दृष्टि से भारत का महत्वपूर्ण राज्य है। वर्तमान में जे-पाल तीन इवैल्यूएशन प्रोग्राम इस राज्य में चला रहा है और उम्मीद है कि भविष्य में जे-पाल उत्तर प्रदेश में अपनी सक्रियता बढ़ाएगा।

क्या है जे-पाल

अब्दुल लतीफ जमीन यावरी एक्सल लीव की स्थापना जनवरी 2003 में एमआईटी के तीन अर्धसामयिकों ईश्वर दुफली, मॅटिल मुलियाथन और अभिजित पी. बनर्जी ने मिलकर की। इस संस्था का उद्देश्य किसी पॉलिटी/स्वयं के प्रभाव को जानना है कि वह किससे कारण है। जे-पाल ने किसी दवा को जीव करने के तरीके को सामाजिक योजना में लागू किया।

क्या है 'रैडमाइज ट्रायल'

किसी दवा के प्रभाव को जानने के लिए स्वयंसेवकों के दो ग्रुप बनाए जाते हैं। एक, ट्रीटमेंट व दूसरा, कंट्रोल। ट्रीटमेंट ग्रुप को दवा दी जाती है और कंट्रोल ग्रुप को नहीं। कुछ समय दोनों ग्रुप में आगे बढ़ना को जांचा जाता है।

ट्रीटमेंट ग्रुप में आगे बढ़ना पर दवा का प्रभाव होता है। यहाँ यह ध्यान रखा जाता है कि ट्रीटमेंट और

कारपोरेट जगत राजनीति में न पड़े : नारायणमूर्ति चेन्ने (प्रैट्ट)। इन्फोसिस के संस्थापक नारायणमूर्ति ने यहाँ एक कार्यक्रम में कहा कि कारपोरेट जगत को राजनीति में अपनी भूमिका नहीं निभानी चाहिए।

कंट्रोल दोनों ग्रुप के ग्रुप वाली आदु, जवन वैसी चीजें समझें हैं। इसी तरीके से जे-पाल ने समझ से जुड़ी पॉलिसी और योजनाओं के प्रभाव जांचने के लिए शुरूआत की है। इस तरीके का फायदा यह होता है कि हमें सही-सही पता लगता है कि किसी योजना का प्रभाव किसका है। उपहारण के दौर पर प्रारंभिक मन्तव्यों में बच्चों को उपरिभूति बढ़ाने के लिए बच्चों को मिट-डे मिल देने को योजना शुरू की गई। तभी किसी अन्य संगठन ने बच्चों को किताबें देने की योजना शुरू कर दी। ऐसे में मिट-डे मिल योजना के प्रभाव का पता 'रैडमाइज इवैल्यूएशन' को मदद से किया जा रहा होता है किताबें खींचने का प्रभाव जिसका ट्रीटमेंट ग्रुप पर पड़ता, उसका ही कंट्रोल ग्रुप पर। यानी ट्रीटमेंट और कंट्रोल दोनों ग्रुप में किताबें खानी योजना के शुरू होने के बाद पढ़ने वाला प्रभाव ही मिट-डे मिल योजना का प्रभाव होगा।

‘काबिल बनाओ, मिट जाएगी गरीबी’

जे-पाल की लॉचिंग पर बोले नारायणमूर्ति

भारतेंदु त्रिवेदी

चेन्ने। भारत और चीन दुनिया की उभरती ताकत हैं। दुनिया को उम्मीद है कि अपने 20 वर्षों में दोनों देश संयुक्त षट्टी आर्थिक इतिहास कायम करेंगे। हालाँकि इस विषय के दूसरे पहलु को देखें तो भारत अब जो कई मामलों में पीछे है। शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला, बच्ची पढ़ाई जैसे कई क्षेत्र हैं, जिनमें भारत छोटे-छोटे देशों से भी पीछे है। 'इन्फोसिस' के संस्थापक नारायण मूर्ति ने ये बातें 'अब्दुल लतीफ जमीन यावरी एक्सल लीव (जे-पाल)' को भारत में लॉचिंग के अवसर पर कही।

नारायणमूर्ति ने कहा कि भारत को गरीबी मिटाने का सबसे अच्छा तरीका है-लॉचिंग को प्रोत्साहित करना जो कि वे देश के आर्थिक विकास में बहुत सहयोग कर सकें। इसके लिए जरूरी है कि किसी भी पॉलिसी को बेहतर तरीके से लागू किया जाए। हालाँकि जे-पाल के कर्मों पर प्रतीकें मेशरी है कि वह दुनिया को बताए कि चीन-सी योजना/कार्यक्रम प्रभावों हैं और क्यों नहीं। श्री मूर्ति ने कहा कि उत्तर भारत को विशेष पर ध्यान देना है जो जे-पाल को भी पीछे छोड़ें।

जे-पाल के दक्षिण एशियाई कार्यालय को चेन्ने में लॉचिंग कार्यक्रम पर जे-पाल के सह-संस्थापक और मैनेजिंग डायरेक्टर इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के प्रोफेसर अभिजित पी. बनर्जी ने कहा कि दक्षिण एशिया में भारत को पहले यह एक ही कारण है कि भारत में किसी सामाजिक विकास/विकास के लिए मानक-सी पानी नहीं है। उन्होंने बताया कि चेन्ने (कासं) इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के प्रोफेसर एंडरिगो एंडरिगो और एमआईटी एशिया एशिया में होने वाले सभी कार्यक्रमों में सहयोगी हैं। उन्होंने कहा कि जे-पाल पॉलिटी/स्वयं को डिजाइन करने में स्वयंसेवकों को मदद करेगी। जे-पाल को निदेशक और एमआईटी की प्रोफेसर ईश्वर दुफली ने 'हिन्दुस्तान' को बताया कि जे-पाल को उत्तर में उत्तर प्रदेश का बहुत महत्व है क्योंकि वह राजनीतिक और आर्थिक दृष्टि से भारत का महत्वपूर्ण राज्य है। वर्तमान में जे-पाल

तीन इवैल्यूएशन प्रोग्राम इस राज्य में चला रहा है और उम्मीद है कि भविष्य में जे-पाल उत्तर प्रदेश में अपनी सक्रियता बढ़ाएगा।

क्या है जे-पाल

अब्दुल लतीफ जमीन यावरी एक्सल लीव की स्थापना जनवरी 2003 में एमआईटी के तीन अर्धसामयिकों ईश्वर दुफली, मॅटिल मुलियाथन और अभिजित पी. बनर्जी ने मिलकर की। इस संस्था का उद्देश्य किसी पॉलिटी/स्वयं के प्रभाव को जानना है कि वह किससे कारण है। जे-पाल ने किसी दवा को जीव करने के तरीके को सामाजिक योजना में लागू किया।

क्या है 'रैडमाइज ट्रायल'

किसी दवा के प्रभाव को जानने के लिए स्वयंसेवकों के दो ग्रुप बनाए जाते हैं। एक, ट्रीटमेंट व दूसरा, कंट्रोल। ट्रीटमेंट ग्रुप को दवा दी जाती है और कंट्रोल ग्रुप को नहीं। कुछ समय दोनों ग्रुप में आगे बढ़ना को जांचा जाता है। ट्रीटमेंट ग्रुप में आगे बढ़ना पर दवा का प्रभाव होता है। यहाँ यह ध्यान रखा जाता है कि ट्रीटमेंट और कंट्रोल दोनों ग्रुप के ग्रुप वाली आदु, जवन वैसी चीजें समझें हैं।

इसी तरीके से जे-पाल ने समझ से जुड़ी पॉलिसी और योजनाओं के प्रभाव जांचने के लिए शुरूआत की है। इस तरीके का फायदा यह होता है कि हमें सही-सही पता लगता है कि किसी योजना का प्रभाव किसका है।

उपहारण के दौर पर प्रारंभिक मन्तव्यों में बच्चों को उपरिभूति बढ़ाने के लिए बच्चों को मिट-डे मिल देने को योजना शुरू की गई। तभी किसी अन्य संगठन ने बच्चों को किताबें देने को योजना शुरू कर दी। ऐसे में मिट-डे मिल योजना के प्रभाव का पता 'रैडमाइज इवैल्यूएशन' को मदद से किया जा रहा होता है किताबें खींचने का प्रभाव जिसका ट्रीटमेंट ग्रुप पर पड़ता, उसका ही कंट्रोल ग्रुप पर। यानी ट्रीटमेंट और कंट्रोल दोनों ग्रुप में किताबें खानी योजना के शुरू होने के बाद पढ़ने वाला प्रभाव ही मिट-डे मिल योजना का प्रभाव होगा।